अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

भक्तिकाल में तुलसी के सामाजिक सरोकार 'रामचरितमानस के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. सुमन लता,
एसो सएट प्रोफेसर (हिंदी)
डी.ए.वी. कॉलेज, पहोवा।

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल ने अपने अतीत का निराशा जन्य धुंधलका देखा , शोर और सन्नाटा भी देखा। धुरीहीनता, आस्था हीनता, दिशाहीनता, अपूर्णता, गन्तव्य हीनता और केन्द्र वहीनता को भी देखा। ऐसी स्थिति में भटकी हुई समाज की वैचारिकता पर भक्तिकाल के रोशन हाथों की दस्तक हुई जहाँ एक ओर निष्क्रियता , टूटन और बिखराव ने अपने पैर पसार रखे थे , वहीं भक्त क वयों की चन्तनधारा ने फूल , शूल, धूल, चन्दन, सुन्दरता, कुरूपता कसी से भी दामन ना बचाते हुए जन - साधारण के मानस पटल को भक्ति और शान्ति से सींचकर आनन्द से तरंगायित कर भ वष्य की स्व र्णम आशा करणों से पो षत कया। भक्त क वयों के रूप में आम-जन के चारों और सुन्दर वैचारिकता का कवच था जिसके फलस्वरूप जन-साधारण को आँखें दिखाते हुए , घेरते हुए कतने सारे तथ्य , वषय, प्रसंग घटनाएँ, मंजर छ वयाँ, शोरगुल और हो हल्ला से राहत मलने लगी यानि भक्तिकाल में सामाजिक मूल्यवत्ता उत्कृष्ट होने लगी, क्यों क भक्तिकालीन क वयों ने समाज के वकृत रूप को सँवारने का अथाह प्रयास कया। डॉ. गोपेश्वर सहं से शब्दों में- "वह काव्य भी है अपने समय का समाजशास्त्र भी , वहाँ क व उपदेशक भी है , धर्मवेत्ता भी और समाज सुधारक भी और साथ ही इन सभी रूपों मे मान्य भी। उनके सामाजिक , धा र्मक रूप से न तो उनके क व को अलग कया जा सकता है और न उनके क व से उनके सामाजिक धा र्मक रूप को। इस अर्थ में भक्तिकाव्य अपनी साहित्यिक और सामाजिक दोनों ही भू मकाओं में अद्भुत और अद् वतीय है। अ धकांशत भक्त क वयों ने शास्त्रीय प्रतिज्ञाओं के साथ काव्य रचना नहीं की है।[1] जन साधारण में आत्मगौरव को जगाने वाले ये क व सामाजिक यथार्थ को देखकर समग्रता से उसका मूल्यांकन कर मानव प्रेम का मूल सन्देश देते हैं।

भक्तिकालीन क वयों में तुलसी सामाजिक मूल्यों को अपने वचारों के केन्द्र में रखते हैं। युग दृष्टा क व तुलसी ने जिस समाज के लए काव्य सृजन कया, उसकी बुनावट भी वो लोक के धागों से बनाते हैं। तुलसी की साहित्य रचनाएँ अपने युग की प्रवृत्तियों , आकांक्षाओं तथा धाराओं से प्रभा वत होकर युग जीवन के मूल्यों और पहलुओं को केन्द्र में रखती है।

तुलसी ने अपने युग को क्या दिया ? इस प्रश्न के उत्तर में यह कहना अनु चत न होगा क उन्होंने हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर 'श्रीरामचरितमानस' जो आदर्श

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

सामाजिकव्यवस्था का महाकव्य है , लोक को अ र्पत कर मनुष्यता का उत्थान कया है। वश्वनाथ त्रिपाठी लखते हैं "तुलसी की क वता अपने देश और काल के यथार्थ पर उगी हुई क वता है। तुलसी भक्त थे वे भक्ति के सामने क वता को कोई खास महत्त्व भी नहीं देते थे ले कन उनकी भक्ति और उस भक्ति को वहन करने वाले उनके व्यक्तित्त्व में वे तत्व मौजूद थे जिनके कारण वे महान क व बन गए"।[2] तुलसी के मानस का उत्तरभारत के हिन्दी भाषी क्षेत्रों के परिवारों में आज भी व शष्ट स्थान है। वर्तमान में भी उसके आदर्श मूल्यों को ही समाज के आदर्श के रूप में स्वीकारा जाता है। 'श्रीरामचरितमानस' का उद्देश्य श्री राम के आर्दश पावन चरित्र का वर्णन करना हैं। तुलसी स्पष्ट घोषणा करते हैं "राम जनम जग मंगल हेतू"

तुलसी परपीड़न तथा दण्ड व्यवस्था के खलाफ थे। वे कसी भी स्थिति में सामाजिक समरसता बनाए रखना चाहते थे । तुलसी के राम ही नहीं भरत भी धर्म के साकार वग्रह हैं । उनके सम्बन्ध में राम को भी कहना पड़ा- 'जो न होत जग जनम भरत को , सकल धरम धुर धरनि धरत को।

'मानस' में भारतीय परम्पराओं को पो षत और पुरस्कृत कया गया जिनमें धर्म संस्कृति व व्यवस्था का संस्कार तथा परिमार्जन कया है। डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय जी लखते है क 'तुलसी के राम संघर्षशील मनुष्य के उच्चतम मानक हैं जो अपने जीवन की तमाम कठिनाइयों पर अपनी निपुणता से वजय प्राप्त करते हैं।[3]

श्रीराचरितमानस में पतिव्रत्य धर्म, पुत्र धर्म, मत्र - धर्म, राज-धर्म आदि व वध धर्मों का अत्यन्त सहज ढंग से निरूपण हुआ है। पुत्र धर्म का उदाहरण दृष्टव्य है-

"अनु चत उ चत वचार तजि, जे पालहि पतु बैन।

ते भाजन सुख सुजन के, बसहि अमरपति ऐन।।

परहित के लए आत्म वस्तार की आवश्यकता होती है। यहां अपने स्व का अतिक्रमण करना होता है। धर्म-अधर्म की इतनी स्पष्ट और सटीक व्याख्या शायद ही कहीं मले-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अघमाई।।"

'मानस आदर्श और महान चरित्रों की वराट स्थली है। तुलसी का रामराज्य सुख-समृ द्ध, सद्भाव, सहयोग, सौजन्य, जीवन - आस्था तथा आनन्द का महापर्व है। रामराज्य के सामाजिक मूल्यों पर आज समूचे वश्व में लोकतंत्र और कल्याणकारी राज्यों की धूम को

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

न्यौछावर कया जा सकता है। सामाजिक मूल्यों की मंजूषा 'रामचरितमानस' समाज के महत्त्वपूर्ण अंगों की ववेवचना करती है। डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय के अनुसार- 'रामचरितमानस' न केवल भरत अ पतु समूचे वश्व सहित्य का गौरव है। यह महत्कृति उच्चतम आदर्शों एवं महत्चरित्रों का महार्ध रत्न है"।[4]

गोस्वामी जी अपने समय के भयावह यथार्थ से पी ड़त होकर , आहत होकर, रामराज्य की आदर्श परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं। वे अपने समय में राज्य एवं सत्ता ह थयाने के लए कये जाने वाले दुष्कृत्यों से भली-भांति परि चत थे , वे जानते थे क कस तरह लोग अपने बन्धु-बान्धवों को मारकर सत्ता पर अ धकार जमाते हैं। गोस्वामी जी की संवेदना तत्कालीन समाज के इस रूप से एवं शासकों की कार्य-नीति से आहत थी।

एकता, अखण्डता और भाईचारा जैसे सुन्दर प्रतिमानों की स्थापना होनी चाहिए , ऐसा तुलसी अनुभव कर रहे थे , क्यों क कहीं जाति के नाम पर , कहीं धर्म के नाम पर , कहीं उपासना पद्धति के नाम पर , कहीं उपास्य के स्वरूप के नाम पर मनुष्य खंड-खंड़ होता जा रहा था, तब तुलसी ने मानवता का संदेश समन्व्यवादिता के माध्यम से भी प्रस्तुत कया। डॉ. प्रेम सुमन शर्मा के शब्दों में- "हिन्दु मुस्लिम संस्कृतियों के एक दूसरे के निकट आने से भारत की सामाजिक संस्कृति का स्वरूप भी चमक उठा। इस प्रकार की प्रवृत्ति वशेष पर वचार करते हुए यह कहा जा सकता है , क मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के मूल में कसी सीमा तक मुख्यता समन्व्यात्मकता की प्रवृत्ति कार्य कर रही थी।[5]

युग दृष्टा गोस्वामीजी के क लयुग निरूपण कर पराधीनता , बेकारी, दु र्भक्ष, वर्णाश्रम संकट, आचार संस्कार लोप , आदि पर अपनी पैनी दृष्टि रखी एवं वकृत होते हुए इन सामाजिक मूल्यों को पुनर्गठित करते हुए सत्संग की महिमा का भी प्रभावोत्पादक रूप प्रस्तुत कया। डॉ. हरिशंकर मश्र लखते हैं- "सत्संग महिमा एव संत लक्षणों का जितना व्यापक एवं प्रभावोत्पादक वर्णन 'श्रीमद्भागवत' एवं तत्पश्चात 'श्रीरामचरितमानस' में हुआ है , उतना कदा चत अन्य कसी ग्रन्थ में अनुपलब्ध है।[6]

चरम ववेक सम्पन्न गोस्वामी जी ने तत्कालीन सामाजिक मूल्यों को बखूबी प्रस्तुत करते हुए भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पो षत कया। सत्य तो यह है क 'मानस' की गहराई को नापना तो असम्भव है। जिस समय में 'रामचरितमानस की रचना तुलसीदास जी द्वारा की गई थी , उस काल में तत्कालीन शासकों की अव्यवस्थित शासन व्यवस्था एवं क रता से राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धा र्मक जीवन त्रस्त हो रहा था। चतुर्दिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

उत्पीड़न व यातनाओं द्वारा समाज वकृत दशा को प्राप्त था। समाज में हिन्दू सनातन धर्म में वकृतियाँ जोर पकड़ती जा रही थी। तुलसीदास जी ने ऐसे समय में भारतीय समाज में आदर्श मानदण्डों की पुनः स्थापना का बीड़ा उठाया , गोस्वामी जी ने 'मानस' रचकर इसे सामाजिक मूल्यों के आदर्शों का जीवन्त प्रतीक बना दिया। का मल बुल्के के अनुसार "इसी एक रचना के द्वारा हिन्दी प्रदेश में रामभक्ति की धारा फैल गई और आज तक प्रवाहित होती रही अतः रामभक्ति के वकास में 'रामचरितमानस' का महत्त्व अद् वतीय है"।[7]

तुलसी की प्रतिभा का महामहिम फल 'रामचरितमानस' जन-जन के मन में बसता है । हिन्दू धर्म ग्रंथों में अति महत्त्वपूर्ण सात कांडों में वभाजित 'मानस' को कौन नहीं जानता, उसमें व्यवहारिक तथा पारलौ कक सत्य का सुन्दर तथा मंगल वधायी निरूपण है यदि इसे हिन्दी भाषा का सर्वा धक लोक प्रय ग्रंथ कहा जाए तो अतिश्योक्ति ना होगी।

यह वचार करने योग्य है क 'मानस' में ऐसे कौन से तत्त्व हैं, जिसके कारण तुलसी के समकालीन समय से वर्तमान समय तक 'मानस' हर घर में मौजूद है। इसका कारण धा र्मक और राजनैतिक तो कदा प नहीं है। तुलसी के 'मानस' को जिसने अमरत्व प्रदान कया है वह है तुलसी की 'लोकदृष्टि, लोकमंगल की कामना ही, तुलसी की साहित्य साधना है। वे शास्त्रमत के साथ लोकमत को भी महत्त्वपूर्ण मानते है। वे मानस में स्वंय लखते है - "सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला "[8]अर्थात् क वतारू पणी नदी का नाम सरयू है जो सम्पूर्ण मंगलों की जड़ है। लोकमत और वेदमत इसके दो सुन्दर कनारे हैं यह लोक ही समाज है, राम ईश्वर होने के साथ ही इस समाज का अ भन्न हिस्सा हैं। वश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार - "तुलसी की वशेषता यह है क उन्होंने राम को सामाजिक , जागतिक और समकालीन नैतिक मूल्यों के आदर्शों का जीवन्त प्रतीक बना दिया।"[9]

समाज और व्यक्ति का परस्पर घनिष्ठ सम्बंध है । समाज ही व्यक्ति को सुसंस्कृत एवं सुसभ्य बनाता है। डॉ. रामनाथ शर्मा के अनुसार- " सामाजिक संगठन में प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार अपने-अपने धर्म का पालन करता था। भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ की धारणा व्यक्ति को सर्वांग जीवन की ओर ले जाती है"।[10]

इस सर्वाग जीवन के आदर्श से समाज के व भन्न अंग भली प्रकार वक सत होकर समाज में अपने-अपने कार्य-भाग अदा करते हैं, यहां हम 'मानस' के संदर्भ में समाज के इन्हीं महत्त्वपूर्ण अंगों की सं क्षप्त ववेचना करेंगे।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

(क) वर्ण व्यवस्था : इस व्यवस्था में भारतीय समाज को चार वर्णों में वभाजित कया गया था। ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' में वर्णों की उत्पत्ति वराट पुरुष से मानी गई है , जिसके मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, उरू (जाँघ) से वैश्य तथा पद (पैर) से शूद्र उत्पन्न हुए-

"ब्राह्मणोडस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः।

उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोडजायत।।"[11]

'मानस' में उत्तरकाण्ड में 'रामराज्य' के प्रसंग में गोस्वामी जी कहते हैं-

"वरनाश्रम निज निज निरत बेद पथ लोग ।

चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग।"[12]

तुलसीदास की यह धारणा हैं क तत्कालीन समाज में जो अनैतिकता, अन्याय, आचार हीनता, वभेद सभी का कारण वर्णव्यवस्था का वकृत होना तथा टूट जाना हैं। तुलसी कहते हैं क क लयुग में न वर्णधर्म रहता है, न चारों आश्रम रहते है, सब पुरुष स्त्री वेद के वरोध में लगे रहते है।

तुलसी के समकालीन निर्गुण संतो की वाणी में वर्ण व्यवस्था के प्रति वरोध दिख जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्री कृष्ण वर्णों की उत्पत्ति के वषय में कहते हैं- "मैनें गुण और कर्म के आधार पर चारों वर्णों की सृष्टि की है। "[13]परन्तु परवर्ती युगों तक आते-आते गुण व कर्म का आधार इसमें नहीं रहा , यह अत्यंत कठोर हो गई , जिसके परिणामस्वरूप समाज के एक वशेष वर्ग को मानवीय अ धकारों से वं चत कया गया। ऐसी स्थिति में तुलसी द्वारा वर्ण व्यवस्था का समर्थन करने पर उनकी गहरी आलोचना भी हुई। 'मानस' में रामराज्य की स्थापना के बाद अयोध्या नगरी के घाट पर चारों वर्णों के पुरुष एक साथ स्नान करते हैं—

"राजघाट सब व ध सुंदर बर।

मज्जहिं तहां बरन चारिउ नर।।"[14]

तुलसी कतने प्रगतिशील है इसे सम्पूर्ण 'मानस' में देखा जा सकता है। पुरुष, स्त्री, नपुसंक, चर-अचर सभी जीवों को साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति ने तुलसी को असंख्य हृदयों तक पहुँचाकर क व से महाक व बना दिया ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

"पुरुष नपुसंक, नारि वा जीव चराचर कोइ।

सर्वभाव भज कपट तजि मोहि परम प्रय सोइ।"[15]

तुलसी वर्ण-व्यवस्था को पथभ्रष्ट समाज में वकल्प के रूप में देखते हैं कन्तु यह व्यवस्था असमानता की पक्षधर कदा प नहीं है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार- "वास्तव में अपने मौ लक रूप में वर्ण-व्यवस्था सामाजिक जीवन और आश्रम व्यवस्था व्यक्ति जीवन के संगठन का आधार है।"[16]

(ख) पारिवारिक मूल्य बोध -परिवार ही हमारे सामाजिक जीवन की आधार शला है। ' जिसमें हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक सारी गति व धयाँ संचा लत होती है । हिन्दू परिवार का जीवन-दर्शन पुरुषार्थ पर आधारित है जो वश्व के अन्य समाजों के परिवारों का जीवन दर्शन नहीं है। अतः परिवार मनुष्य के सभ्य और सुसंस्कृत होने का स्वाभा वक तारतम्य है जिसके माध्यम से मानव जीवन का उन्नयन होता हैं। "[17]तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में परिवार के आदर्श और मर्यादा को स्था पत करने का सुन्दर प्रयास कया है यह प्रयास इतना प्रभावी है क आचार्य शुक्ल लखते हैं क "यदि भारतीय व शष्टता और सभ्यता का चत्र देखना हो तो इस राम समाज में दे खए। कैसी परिष्कृत भाषा में कैसी प्रवचन पटुता के साथ प्रस्ताव उपस्थित होते हैं कस गंभीरता और व शष्टता के साथ बात का उत्तर दिया जाता है छोटे-बड़े की मर्यादा का कस सरलता के साथ पालन होता है।"[18]

'मानस' में राम कैकेयी संवाद में कैकेयी की कठोर आज्ञा पर श्री राम मीठी वाणी एवं व शष्टता से कहते हैं -

"सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पतु मातु वचन अनुरागी।

तनय मातु पतु तोश निहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।"[19]

तुलसी ने परिवार में केवल आदर्श चरित्रों को ही नहीं अ पतु यथार्थ चरित्रों को भी प्रस्तुत कया है। कैकेयी मंथरा ऐसे ही यथार्थ पात्र है जो हर कुटुम्ब में मल जाते हैं। राम वनवास के बाद भरत संहासन ग्रहण नहीं करते, भरत राम मलाप की हृदयस्पर्शीता 'मानस' के पाठकों को भाव वभोर करती है। सीता का राम के साथ वन जाना , वहीं सीता हरण के बाद राम द्वारा व्याकुल होकर सीता को ढूंढना ये सब वृतांत आदर्श कुटुम्ब की नि र्मति

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

दर्शाते हैं। 'मानस' में र चत आदर्श परिवार आज भी समाज व परिवार के वकास के लए उतना ही आवश्यक है जितना क सोलवीं शती में था।

(ग) गुरु शष्य सं बंध : मानस में गोस्वामी जी ने 'गुरु महिमा' की महत्ता की असंख्य स्थानों पर चर्चा की है । बालकाण्ड के प्रारम्भ में ही ईश वन्दना के बाद वे गुरु महाराज की वन्दना करते हुए कहते हैं-

"श्री गुर पद नख मनि गन जोति
सु मरत दिव्य दृष्टि हिय होती।"[20]

प्रत्येक मंगल कार्य पर गुरु को दान देने और आशीर्वाद लेने का वर्णन मानस में कया है। राजा दशरथ की गुरु के प्रति भक्ति को व र्णत करते हुए क व कहते है क-

"जे गुर चरन रेनु सर धरहीं।
जनु सकल वभव बस करहीं।"[21]

भारतीय समाज में गुरु शष्य सम्बंध बहुत ही घनिष्ट था। समाज में उसकी स्थिति सर्वोच्च थी, अतः गोस्वामी जी ने भारतीय समाज में गुरु को प्राप्त आदर भाव, गरिमा और प्रतिष्ठा को ही मानस में प्रतिबिम्बित कया हैं ।

(घ) नारी का स्थान : हिन्दू समाज में नारी के लए सम्मान व मर्यादायुक्त दृष्टि रखी जाती थी । वैदिक काल में स्त्रियों को पुरुषों के समान ही सभी अ धकार प्राप्त थे , कन्तु युग के परिवर्तन के साथ स्त्रियों की दशा तथा पुरुषों का उनके प्रति दृष्टिकोण परिवर्तन होने लगा। 'मानस' में अनेक स्थान पर 'नारी धर्म' का उल्लेख कया गया है। सीता की वदाई के समय उनकी माताएं उन्हें पति सेवा की सखावन देती है। सीता की स खयाँ भी सीता को अत्यंत स्नेह से और कोमल वाणी में सीता से स्त्रियोंके धर्म की बात कहती हैं, वन गमन के समय अनसूयाजी सीता से कहती है क शरीर वचन और मन से पति के चरणों से प्रेम करना, स्त्री के लए बस यह एकही धर्म है, एक ही व्रत है और एक ही नियम है-

"एकड़ धर्म एक व्रत नेमा,
काँय वचन मन पति पद प्रेमा।"[22]

रावण की मृत्यु के पश्चात सीता को अपने आप को पतिव्रता सद्ध करने के लए अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। यद्य प गोस्वामी जी इसे लीला कहकर और शीघ्रता से सीता की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

अग्नि परीक्षा कराकर राम-सीता का प्रस्थान करा देते है जिस क व ने 'मानस' में लगभग हर वर्ग के प्रति प्रगति शीलता दिखलाई यहाँ आकर उनकी दृष्टि संकीर्ण क्यों हो जाती है। इसका कारण तत्कालीन समाज में दिखता है ।पुरावैदिक काल में स्त्रियों की दशा व स्थिति कुटुम्ब तक की सी मत हो गई थी । परिणामस्वरूप अब वह पति और पति धर्म के बंधनों में बाँध दी गई।

कन्तु गोस्वामी जी स्त्रियों की इस परतन्त्र भाव वाली मनःस्थिति व पीड़ा को समझ रहे थे। बालकाण्ड का बहुच र्चत प्रसंग जब रानी मैना अपनी पुत्री पार्वती से पति सेवा अर्थात शव चरणों की पूजा की सखावन देती है अचानक ही इस प्रकार की बातें कहते–कहते उनकी आँखों में आँसू भर आते है। उन्होंने अपनी कन्या को छाती से चपटा लया और फर बोली- "कत व ध सृजी नारि जगत माहि। पराधीन सपनेहूँ सुख नाहि"।

(वधाता, जगत में स्त्री जाति को क्यों पैदा कया **?** पराधीन को सपने में भी सुख नहीं मलता।)

अतः तुलसी के स्त्री सम्बन्धी दृष्टिकोण को संकीर्ण कहना , हमारा एकांकी दृष्टिकोण होगा । वस्तुतः हर लेखक अथवा क व अपने युग के सापेक्ष रचना लखता है। युग और सन्दर्भ बदल जाने पर उसके साहित्य के मूल्यांकन के आधार भी दोबारा बदल जाते हैं। यह सत्य है क तुलसी के काव्य में नारी, नारी धर्म अथवा पति सेवा में ही शोभा पाती है, कन्तु नारी की परतन्त्रता की पीड़ा तक पहुँचना भी उस युग में प्रगतिशीलता थी , जो प्रमा णत करता है क समाज में नारी की स्थिति व दशा को लेकर भी गोस्वामी में चेतना थी। तत्कालीनसामाजिक मूल्यों को देखकर , जाँचकर, परखकर लखकर चरम ववेक सम्पन्न गोस्वामीजी ने जनसाधारण के मस्तिष्क और हृदय पर सद्भावों की ऐसी गहरी छाप छोड़ी है जो जन जीवन को व्यवस्थित तो करती ही है साथ ही उनकी भावनाओं की भी कद्र करती है। उनका भक्ति रस में रचा हुआ परम पावन ग्रन्थ 'रामचरितमानस' कुछ अनजान सागरीय गहराई भी रखता है जिन्हें साफ-साफ देखना या नापना लगभग असम्भव सा लगता है। दूसरी ओर गोस्वामी जी एक पारदर्शी झरना लगते हैं जो तत्कालीन सामाजिक मूल्यों को साफ-साफ देखते सुनते, सोचते, समझते कहते और लखते हैं । सहृदय क व ने ऐसे काव्य का सृजन कया जो लोक का प्रतिनि धत्व करता है। पारखी क व ने लोक मंगल की भावना से लोक संस्कृति को मन भावन प्रतिष्ठा देते हुये सामाजिक मूल्यों की उत्कृष्टता को अपने काव्य में संजोकर मानव जाति के समग्र इतिहास को पारदर्शी झरनें की भाँति प्रस्तुत कया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

है। वास्तव में ऐसा संघर्षशील व्यक्तित्त्व मलना असंभव है । यह सत्य है क 'रामचरितमानस' एक ऐसा महाकाव्य है जो जन-जन के मन में बसता है , नई ऊर्जा देता है, उत्साह से भरता है। वास्तव में रामकथाएँ तो पहले भी लखी गई थी परन्तु 'रामचरितमानस' ना थी, जैसे मकबरे तो पहले भी बने थे, परन्तु 'ताजमहल' ना था।

--*-*-*

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

सन्दर्भ:

1. गोपेश्वर संह, भक्ति आन्दोलन और काव्य, पृष्ठ सं. **54-55**
2. वश्वनाथ त्रिपाठी, 'लोकवादी तुलसीदास, पृष्ठ सं. **83**
3. डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय,'मध्यकालीन काव्य चंतन और संवेदना', पृष्ठ स. **86**
4. डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय,'मध्यकालीन काव्य चंतन और संवेदना', पृष्ठ सं. **87**
5. डॉ. प्रेम सुमन शर्मा,'हिन्दी वैष्णव भक्तिकाव्य में प्रगतिशील तत्त्व, पृष्ठ सं. **35**
6. हरिशंकर मश्र , "श्रीमद्भगवत और तुलसी साहित्य " तुलनात्मक अनुशीलन ', पृष्ठ सं.**245**
7. का मल बुल्के; 'राम कथा प्रसंग', पृष्ठ सं. **197**
8. 'रामचरितमानस' बालकाण्ड, दो. **39**, चौ. **6**
9. वश्वनाथ त्रिपाठी, 'लोकवादी तुलसीदास, पृष्ठ सं. **16**
10. डॉ. रामनाथ शर्मा, 'भारतीय समाज, संस्थाएं और संस्कृति, पृष्ठ सं. **29**
11. ऋग्वेद **10/90/12**
12. 'रामचरितमानस', उत्तरकांड, दो. **20**
13. 'श्रीमद्भागवद्गीता', अध्याय **4**, श्लोक **13**
14. 'रामचरितमानस', उत्तरकांड, दो. **29**, चौ. **2**
15. 'रामचरितमानस', उत्तरकांड, दो. **87** (क)
16. डॉ. नगेन्द्र, तुलसी संदर्भ, पृष्ठ सं. **21**
17. डॉ. जयशंकर मश्र, 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास', पृष्ठ सं **369**
18. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 'त्रिवेणी' पृष्ठ सं. **67-68**
19. 'रामचरितमानस', उत्तरकांड, दो. **5, 1**
20. 'रामचरितमानस', बालकाण्ड, दो. **1**, चौ. **3**
21. 'रामचरितमानस', अयोध्याकाण्ड, दो **3**, चौ. **3**
22. 'रामचरितमानस', अरण्यकाण्ड, दो. **4**, चौ. **5**